Regn. No : BR-35-0029626

ISSN No : 9334-0970

प्रान्ति इंडिया

वर्ष : 1 | अंक : 1| जुलाई 2024 | ₹ 150

संपादक : ए. के. प्रसाद

अनुक्रम

अनुक्रम 01
हमारे बारे में 02
संपादकीय 03
कविताएं 04
गुरु और विद्यार्थी (निबंध) 29
कवि (एकांकी) 32
परिश्रम (लघुकथा) 33
सैंडविच (लघुकथा) 34
अपराध बोध (लघुकथा) 35
किन्नर (रिपोर्ताज) 37
चार पैसे वाला गणित (कहानी) 39
गर्मियों की छुट्टियां (कहानी) 42
बनारसी पान (संस्मरण) 45
प्रतियोगिता (चित्रकला) 52

हमारे बारे में

श्री ए. के. प्रसाद अपने पिताजी के सानिध्य व सहयोग से एक प्रकाशक के रूप में इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में उदित हुए। इन्होंने साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में प्रान्ति इंडिया की स्थापना की। इन्होंने कुछ दिन व्यक्तिगत रूप से कार्यों का अनुभव लिया फिर एक अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम का गठन कर गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करना शुरू किया। अभी तक यह टीम 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है और प्रतिवर्ष लगभग 8-10 नई पुस्तकें प्रकाशित करने का इरादा रखती है। इस अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। इनका सदैव यह प्रयास रहता है कि सरल व सहज भाषा-शैली में आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ जाए।

प्रान्ति इंडिया

वर्ष : 1 | अंक : 1| जुलाई 2024 | ₹ 150

पत्र व्यवहार

संपादक
ए. के. प्रसाद
प्रान्ति इंडिया कार्यालय
बगौरा, बिहार - 841404
हेल्पलाइन : +91 7258072725
मेल : editor@prantiindia.com
वेबसाइट : www.PrantiIndia.com

घोषणाएं

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार उनके निजी है। उनसे स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक का सहमत या असहमत होना जरूरी नहीं है।

हमें रचनाएं मौलिक बताकर ही मिलती है। इसलिए अगर कॉपीराइट का कोई मामला सामने आता भी है तो केवल रचनाकार को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

© **कॉपीराइट :** प्रान्ति इंडिया, सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पत्रिका के किसी भी अंश का किसी भी रूप में उपयोग प्रकाशक के पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

® **पंजीकृत :** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक ए. के. प्रसाद द्वारा बगौरा, बिहार, 841404 से प्रकाशित एवं प्रान्ति इंडिया से मुद्रित। **संपादक- ए. के. प्रसाद**

संपादकीय

प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श हुआ कि वर्तमान परिवेश में प्रकाशन व्यवसाय की व्यवस्था कितनी विस्तृत व महंगी हो गयी है। आजकल तो लेखक बनने की इच्छा रखने वाले हर रचनाकार का शुरुआती मन इस दुविधा से जूझता ही है कि यात्रा का प्रारंभ किस प्रकार किया जाए ? सबसे पहले किस प्रकाशक के पास जाया जाए ? यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि रचनाएं छप ही जाएगी ? यदि कहीं गलत जगह नवांकुर अपनी पांडुलिपि और पैसा देकर फंस गया तो फिर किसी और प्रकाशक पर विश्वास कर पुनः प्रयास करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इन्हीं सब उधेड़बुन से निकालने के लिए प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ और यह निर्धारित किया गया कि इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। कोई भी, किसी भी उम्र का रचनाकार अपनी कविताएं, ग़ज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि प्रकाशन-सामग्री अपने संक्षिप्त परिचय और एक फोटो के साथ कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर प्रत्येक महीने के 25 तारीख तक भेज सकते है।

A. Prasad

प्रकाशक/संपादक

विश्वास

जनता चुनती नेता को,
करके मन में पूर्ण विश्वास,
नियम बनेगा सबके हित में,
रखती अपने मन में आस,
शांत मन से चर्चा हो,
हो केवल गहन विमर्श,
पालन करें अपने कर्तव्य का,
ना हो संसद में संघर्ष,
पक्ष-विपक्ष की लड़ाई में,
ना हो थोड़ा भी शोर,
भेंट क्यूँ चढ़ता सत्र है,
सांसद करे विचार,
हंगामा होता संसद में,
शर्म आती जनता को,
देखे सारा संसार,
क्यूं करते वक़्त बर्बाद,
विकास कैसे होगा,
कैसे होगा देश आबाद,
सच्चे, अच्छे बनाओ, हितकारी कानून,
सबका भरोसा आप पर,
निस्वार्थ होकर,
करिए तय मजमून,
वैशाली ने दिया प्रजातंत्र का नारा,
जनता की अब लाज बचाओ,
सारा हिन्दुस्तान तुम्हारा।

@ भोला शरण प्रसाद, उत्तरप्रदेश

परिवर्तन

आज लड़की हूँ, कल औरत बनूँगी,
खुद को भूलकर "मैं" सबको चुनूँगी।

कहीं ख़्वाब आँखों में छिपा रहेगा,
"मैं" हकीकत बनकर, सबसे मिलूँगी।।।

नया सा जब कोई, कल द्वार दिखेगा,
वही सपनों की चादर ओढ़कर सजूँगी।

वो किस्सा रात का रात ही छोड़कर,
फ़िर प्रातः भौर का "मैं" गीत सुनूँगी।।

लगा, राह नई, कोई साथ नया सा,
"मैं" उसी नए के ही साथ दिखूँगी।

पल-पल जब कोई ढूंढेगा मुझे,
"मैं" बन धड़कन कहीं और बंधूँगी।।

बदलते ख़्वाब जहाँ नज़र आएँगे,
फ़िर, यादों संग भी, "मैं" वही बसूँगी।

दिल की ख्वाहिश अधूरी मिटाकर,
दिल को फ़िर संभाल कर रखूँगी।।

आज लड़की हूँ, कल औरत बनूँगी,
खुद को भूलकर "मैं" सबको चुनूँगी।।

@ अक्षिता जांगिड़

जिंदगी

जिंदगी भी कैसे-कैसे मोड़ दिखाती है,
कभी आंखों में सपने,
कभी उन्हीं में आंसू दे जाती है,
कभी बसंत की हरियाली जैसी,
कभी पतझड़ बन जाती है,
जिंदगी भी कैसे-कैसे मोड़ दिखाती है।।
सर्द रातों को सड़कों पर,
जो दुबके बैठे रहते हैं,
इस तलबदार पेट के पीछे,
किस्मत से लड़ते रहते हैं,
जाने कब किस मोड़ पर,
मौत उन्हें अपनाती हैं,
और उन्हें आगोश मे लेकर,
प्यार से सुलाती है,
ज़िंदगी भी कैसे-कैसे मोड़ दिखाती है।।
हर सुबह उनके लिए,
होता है एक नया जीवन,
होते हैं खाली हाथ लेकिन,
स्फूर्ति से भरा होता है मन,
काम खोजने लग जाते है,
आंखों में लेकर एक आस,
दो वक्त की रोटी-कपड़ा,
यही होती है उनकी प्यास,
बस इसी में उनकी ज़िंदगी उलझ जाती है,
ज़िंदगी भी कैसे-कैसे मोड़ दिखाती है,
कभी आंखों में सपने,
कभी उन्हीं में आंसू दे जाती है।।

@ आरती वर्मा, उत्तरप्रदेश

कोलाज़

खंड-खंड ही सही
कतरनों के कोलाज़ मेरे
संघर्षों के बिखरे
अवरोधों को जीते
टुकड़ा-टुकड़ा पैबंदी
जीवन को सीते
अशांत और क्षुब्ध हैं
चित्त के प्रतीक यह
विभिन्नता में एकता का
समेटे द्वंद्व
अपने आप में
अभी चुके नहीं है
मेरी कविता के कथ्य
शब्द और उनकी ऊष्मा
मन करता है
सूर्य का नव-स्फूर्त लेकर
मिटा दूं उन अभागों के सन्नाटे
जो बैठें हैं गलबैंयां डाले
अभावों के घुप्प अंधेरों में
सुनों, नहीं है मोहताज़
किसी शीर्षक के
कतरनों के कोलाज़ मेरे
ठहरो !
अभी ऊर्जा बाकी है
युद्धरत है आदमी।

@ रशीद ग़ौरी, राजस्थान

मम् हरो फंद

जय जय गणेश
सब हरो क्लेश
हे सिद्ध विनायक
हे गणनायक
सबके सहायक
शुभ फलदायक
हे शूपकर्ण
हे सुरेश्वरम्
हे मूषकवाहन
हे देव शुभम्
हे महावली
हे लम्बोदर
हे मृत्युञ्जय
हे विघ्नेश्वर
हे भालचन्द्र
हे एकाक्षर
हे प्रथम पूज्य
सबके ईश्वर
हे गजवदन
मंगलकारी
हैं रुद्रप्रिय
हे शुभकारी
हे गणाध्यक्ष
हे गौरीसुत
हे वक्रतुण्ड
मम् हरो फंद

@ व्यग्र पाण्डे, राजस्थान

इतिहासकार

जानने को अतीत
परखने को क्या हुआ व्यतीत,
कैसी रही पुरानी रीत
ऐतिहासिकता का गाने गीत,
बताने वर्तमान का विकास
लिखने चला मैं इतिहास।
जब वास्तविकता ने दिया घाव
अधूरे सच से हुआ लगाव,
मत विशेष के प्रति झुकाव
अति विश्वास में आया ताव,
कोरी कल्पना आई रास
लिखने चला मैं इतिहास।
उनकी रचना का रखवाला बनकर
उनके मत का मतवाला बनकर,
उनके गले की माला बनाकर
मैं भी लिखता हूं अब तनकर,
अन्य मतों को कहता बकवास
लिखने चला मैं इतिहास।
मूल तथ्य छुपाने को
साहब द्वारा अपनाने को,
साहब का कलम सहलाने को
बुद्धिजीवी कहलाने को,
उनकी स्वीकृति से करता कृत्य
उनकी थिरकन मेरा नृत्य,
उनकी वीणा मेरा तार
उनकी हुंकृति मेरा झंकार,
वैचारिकता के सम्रांगण में
मैं खेलता उनके प्रांगण में,
करके इतिश्री उड़ाके हास
अब मैं यूं लिखता इतिहास।

@ ओम शंकर मिश्र, उत्तरप्रदेश

बारिश

बारिश के आने पर
मैं खुद का नहीं रहता
तेरी यादों में खो जाता हूं
ऐसे कैसा होता है मुझे पता नहीं।।।।।

बारिश याने प्रेम
प्रेम याने तुम
आकाश में बादल पूरी तरह भर जाने से
बारिश में तेरा लिपट जाना, ताकि
मैं कहीं भीग ना जाऊं।।।।।

बारिश
हम दोनों के लिए अलग अलग है
उसके लिए केवल कीचड़
मेरे लिए उसकी अनगिनत यादें।।।।।

@ अच्युत उमर्जी, महाराष्ट्र

ज़िन्दगी

जिन्दगी बडी अजनबी सी लगती है तू मुझे,
हमदर्द से ही दर्द दिलवाती है,
मरहम तू वक्त का लगाती है,
चेहरे पर मुस्कुराहट और आँखों में,
आँसू तू एक साथ दे जाती है,
फिर भी बडी सच्ची सी लगती है तू मुझे,
हाँ।।।जिन्दगी बडी अजनबी सी लगती है तू मुझे,
तन्हा कहाँ तू छोड़ती है तू मुझे,
अपनी यादों से जोड़ती तू मुझे,
कभी मीठी कहानी,
कभी कडवी हकीकतो से रूबरू करवाती तू मुझे,
फिर भी अच्छी लगती है तू मुझे,
जिन्दगी बडी अजनबी सी लगती है तू मुझे।

@ वन्दना सिलोरा

सफर

बड़ी अजब है रीति यहाँ की
सबको बस चलते जाना है।
बिना कहे बिन बोले कुछभी
यह सफर पूर्ण हो जाना है।
सांसों की डोरी का ये बन्धन
ये संसार मुसाफिर खाना है।
आते हैं यहाँ कितने हर दिन
वापस कितनों को जाना है।
भूले रहते इसको हैं सबजन
ये तो दो दिन का ठिकाना है।
सभी सफर पर हैं फिर भी वे
सत्ता ही इसको मान चले हैं।
सांसों की डोरी तक है नाता
किसकी बोलो यहाँ चले है।
मानवता का ये दामन थामो
हँसते ये सफर कट जाना है।
आया है जग में जो भी जीव
इक दिन उसको तो जाना है।
मानों इतना बस तुम दिल से
जग एक मुसाफिर खाना है।

@ डॉ. सरला सिंह "स्निग्धा", दिल्ली

आज की नारी

शहर की दीवारों पर
अश्लील पोस्टरों की बाढ़ में
डूबती-उतरती नारी आकृति-
जिसकी स्पर्शानुभूति के लिए
अवमूल्यित संदर्भों
और लुप्त संवेदनाओं के बीच
असंख्य हाथ लपलपाते हैं।
जुलूसों/सभाओं में
नारी शोषण बंद करो के नारे
गर्म तवे पर पड़े
पानी की बूंदों की तरह
क्षणभर में ही वाष्पित हो जाते हैं।
तबले की थाप में दबी
अबला की सिसकियां,
दहेज की वेदी पर
न्योछावर होती बेटियां
और सामाजिक संकीर्णताओं की
सलीब पर लटकती
आज की नारी का अंतस् -
अपनी महाशक्ति से,
चीरहरण के लिए उठे हाथों को
काटने के लिए लालायित है,
कुदृष्टि युक्त आंखों को
फोड़ने के लिए संकल्पित है
और दहेज लोभियों को
उसी की जलाई हुई आग में
झोंकने के लिए समर्थ है।
यदि तुम मर्यादा पुरुषोत्तम
नहीं बन सकते हो
तब मत खींचो कोई ऐसी रेखा
जो तुम्हारी कायरता का
बोध कराती है।
स्वतंत्र कर दो सीता को
बनाने दो अपना विस्तृत आकाश,
रचने दो एक नया इतिहास,
करने दो आततायियों का वध !
हे पुरूषों,
वेदों, शास्त्रों और मान्यताओं में
नारी पूज्या है।।।भोग्या नहीं।।
चलना है तो साथ चलो
वरना याद रखो-
समस्त नारी में विद्यमान है
महिषासुर मर्दिनी रूपी शक्ति-
कुचलने के लिए
अत्याचारियों का जहरीला फन,
जो निरन्तर डंसता है
अस्मिता नारी की।।।।

@ विनोद प्रसाद, बिहार

श्रमिक गीत

है मिट्टी मेरी और मैं मिट्टी का।
यही है मेरा रिश्ता इसका।
श्रमिक मैं कहलाता हूँ।
दिन रात पसीना बहाता हूँ।
ना देखूँ धूप ना छांव यहाँ।
ना बारिश ना,ना शीत यहाँ।
हर सुबह कमाने जाता हूँ।
कभी फसल काटता खेतों में।
कभी तपता ईंट के भट्टों में।
कहीं सड़क भी मैं बनाता हूँ।
मंदिर,मस्जिद,गुरूद्वारों में।
मैं पसीना अपना बहाता हूँ।
हर दिन मेहनत के गीत सदा।
मैं यूँ ही गुनगुनाता हूँ।
हर शाम लौटता जब घर में।
अपनों संग खाना खाता हूँ।
है संतोषी मेरा जीवन।
मैं श्रमिक हूँ,मैं श्रमिक हूँ।
श्रम से पहचाना जाता हूँ।
श्रम से पहचाना जाता हूँ।

@ धीरज कुमार शुक्ला 'फाल्गुन', राजस्थान

माँ शारदे !

तजुर्बे की दौलत है और झुर्रियों की जायदाद है ,
बुजुर्गों के पास सिर्फ गुजरे हुए दिनों की याद है।

एक पीढ़ी को बहुत अच्छे से पाला है ,
बच्चों संग माँ बाप को भी संभाला है ,
जिंदगी की राहों में धक्के भी खाये हैं ,
फिर भी बच्चों का भविष्य बनाये हैं ,
इनके निस्वार्थ सहयोग व प्यार से बच्चे आबाद हैं।

ऐसा नहीं था नेत्र आंसू में भीगे नहीं ,
पर कभी कर्त्तव्य पथ से डिगे नहीं ,
बहुत सारी खुशियों को नकारा है ,
तब जा कर परिवार को संवारा है ,
बच्चों के हँसते चेहरे इनकी मेहनत का प्रसाद हैं।

अपने बारे में कभी नहीं सोचा ,
बहता हुआ पसीना नहीं पोछा ,
कांटों पर हंसते हुए चलते रहे ,
सफल हो के बच्चे बदलते रहे ,
अब ज़माने की उपेक्षा से इन्हे होता अवसाद है।

इन्हे चाहिए बस थोड़ा सा वक़्त ,
बुजुर्ग जड़ हैं और बच्चे दरख़्त ,
एकदूजे के बिन दोनों हैं अधूरे ,
चलो मिल के करें परिवार पूरे ,
सौहार्द और प्रेम सुखी जीवन की बुनियाद है।

@ अपूर्व 'आकर्षण', कर्नाटक

दीदार

दुपहरिया चढ़ती नहीं,
शाम ढलती नहीं,
रात कटती नहीं,
सुबह होती नहीं,
और ये जो रात है न,
हम दोनों के बीच दिवार बन गयी है,
कहना चाहती है बहुत कुछ,
पर अन्धेरों से घिर गयी है,
वक्त कट नहीं रहा,
समय बदल नहीं रहा,
सुई थम सी गयी है,
घड़ी बन्द पड़ गयी हैं,
एक-एक क्षण अब मुश्किल हो गया है,
राह भी सुना पड़ गया है,
जुगनूओं कि आवाज आने लगी है,
तारे भी चमकने लगे हैं,
पर रात कटी नहीं,
इंतजार रहा सुबह का पर हुआ नहीं,
हुई भी तो, बहुत देर हो चुकी थी,
सोचते-सोचते वह जा बसी थी,
किसी दुसरे लोक में,
एक नयी दुनिया में,
जिससे थी वो अनजान पूरी तरह,
अनकही अनसुनी बातें जहां थे सिर्फ़ उसी के चर्चे,
जा बसी वो प्रियतम के इन्तजार में,
चली गयी वो उसी दुनिया में,
जहां होता दीदार, उसके प्रियतम से।

@ नेहा चौरसिया, असम

प्रजातंत्र

जीत और हार के बीच का षड्यंत्र हूं,
मैं प्रजातंत्र हूं।
लोगों से ही निकल कर उनपर शासन का एकमात्र मंत्र हूं,
मैं प्रजातंत्र हूं।
जनता के आवाज की बिलखती हुई अंश हूं,
मैं प्रजातंत्र हूं।
जोड़ने का काम था मेरा ,आज तोड़ने का मंत्र हूं,
मैं प्रजातंत्र हूं।
गुलामी की बेड़ी के बाद मैं एकमात्र विकल्प था,
और देश की उथान का मैं अटल संकल्प हूं,
मैं प्रजातंत्र हूं।
जनता से है आन मेरी ओर जनता से हीन शान,
और जनता की उड़ान का मैं विशेष यंत्र हूं,
मैं प्रजातंत्र हूं।
मेरी कीमत पहचानो कितने विध्वंश के बाद मैं इस देश का अंश हूं,
मैं भारत का प्रजातंत्र हूं।

@ प्रिंस पांडेय

मनोभाव

ये जो लेडिज फर्स्ट कहा करते हो,
ये दो शब्द
हमारे हृदय को छू जाया करते हैं,
कभी शूल बन कर चुभ जाते हैं,
कभी सहानुभूति बन सुकून देते हैं,
ख़ैर, पुरुषों की,
जो भी मंशा रही हो इनको लेकर
हम स्त्रियां,
इस सम्मान को सहर्ष स्वीकारती हैं।
ये हमारी जिंदगी को,
बहुत आसान कर देते हैं,
संतुष्ट कर देते हैं,
कभी उपेक्षित अंतर्मन को भी,
सुनो न !
एक अनुग्रह का आग्रह और भी है
हम स्त्रियों का, तुम पुरुषों से,
ये सम्मान ऐसे ही बनाये रखना,
जीवनपर्यंत और जीवनोत्तर तक
अपनी सहानुभूति और सम्मान
दोनों ही हमारे आँचल में भर देना,
चूड़ी, गजरा, बिंदिया, कंगना, पैरों में महावर,
और माँग में सुर्ख सिंदूरी गहना सब हमें तुम पहना देना!!
रोमांचित कर देगी वो छुअन एहसासों की,
हमारे शिथिल आत्मा से भिन्न पड़े शरीर को भी
चला चली की बेला में हमें आगे जाने देना,
दुनिया से रूखसती के वक्त भी
तुम ये लेडिज फर्स्ट निभा देना।

@ डॉ. श्वेता, बिहार

विजय श्री

ऐ विजय श्री तू कर विचार
मैं ठान हृदय में बैठा हूं
तुझे खोजना है पथ तेरा
मुझे दर पर तेरे आना है
ऐ विजय श्री तू कर विचार
मैं ठान हृदय में बैठा हूं।।

चाहे दिन जितने लग जाये,
पाने को आसन गढ़ में तेरे
मैं रार मचाने पग पग पर
निकला हूँ पाने जय रण में
होगा तेरा आलिंगन कैसा
क्षण प्रतिक्षण मंथन करता हूँ
ऐ विजय श्री तू कर विचार
मैं ठान हृदय में बैठा हूं।।

मैं पथिक तेरी सुधबुध खोया
मुझ पर जग जो ये हँसता है
मैं कर्म विधा की करूँ बात जो
वह पाखंडों से मन ढंकता है
मैं मंद मंद मुस्कान मृदु भर
हर हृदय को साझा करता हूँ
ऐ विजय श्री तू कर विचार
मैं ठान हृदय में बैठा हूं।।

भले ओस है तिमिर घना
भ्रम जाल बिछा है उदासीन
इधर उधर कुछ नहीं सूझता
है व्योम ढंका रति के अधीन
पग कंटक कितने रहें चूमते
पुष्प तलवों को मेरे लगता है
ऐ विजय श्री तू कर विचार
मैं ठान हृदय में बैठा हूं।।

होगा कैसा कंठहार पुष्प का
जश्न गीत का राग अलाप
तुम्हे पता क्या बात करेंगी
जिव्हा जो करतीं द्वेष गान
मुझे साध्य कर्म है दिखते
मैं बन चंचल क्योंकि चलता हूँ
ऐ विजय श्री तू कर विचार
मैं ठान हृदय में बैठा हूं।।

@ आरसी यादव 'चेतनअंस', नई दिल्ली

एहसास

वक्त की रफ्तार में
महंगाई की मार में
सुबह की रोशनी में
रात के अंधकार में
कहीं खो सी गई हूं।।।।।। मैं

यादों की परछाई में
जीवन की सच्चाई में
रिश्तों की बुनाई में
दिल की गहराई में
कहीं खो सी गई हूं।।।।।मैं

अनसुलझे सवालों में
बेतुके जवाबों में
सुख-दुख के बहाव में
दूसरों के मान-सम्मान में
हठ व अभिमान में
कहीं खो सी गई हूं।।।।।।।मैं

जिंदगी की भाग दौड़ में
खुद को साबित
करने की होड़ में
उम्मीदों में, आकांक्षाओं में
एहसासों में, जज्बातों में
कहीं खो सी गई हूं।।।।।।। मैं

मिट्टी की सुगंधि में
पुष्पों की सुरभि में
हवा की सरसराहट में
पक्षियों की चहचहाहट में
खुद को ढूंढ रही हूं ।।।।।।मैं

अपने बुलंद हौसलों से
मजबूत इरादों से
अपने जनून से

अब खुद को ढूंढ रही हूं ।।।।।।मैं
हां।।।।खुद को ढूंढ रही हूं मैं ।।

@ सीमा चुघ, उत्तरप्रदेश

ठिकाना

एक धुन में रहती हूँ,
थोड़ी सुन मैं रहती हूँ,
क्यों ढूंढ़ते हो बाज़ारों में,
मैं तुम में रहती हूँ।

आँख का पानी हो गई हूँ,
बच्चों की कहानी हो गई हूँ,
न बहलाओ अब बातों से,
मैं सयानी हो गई हूँ।

जो कहते हैं अपनी,
बस उन में रहती हूँ,
क्यों ढूंढ़ते हो बाज़ारों में,
मैं तुम में रहती हूँ।

एक अजीब सा शोर मुझमें है,
जैसे कोई चोर मुझने हैं,
खुद को धकेल दिया अंधेरों में,
ये कैसा जोर मुझमें है।

इसी उलझन में रहती हूँ,
क्यों ढूंढ़ते हो बाज़ारों में,
मैं तुम में रहती हूँ।

@ काव्य वर्षा

मातृमन

बेटे !
कैसे हो ?
पूछती हूँ तुमसे
बताओ तो सही !
क्यूँ युवाओं की
अस्वस्थता इतनी बढ़ रही अभी ?
हम बुजुर्ग तन मन का
ख़्याल रख रहे
पर युवा क्यूँ असमय
काल के गाल चढ़ रहे ?
माँ !
समय बड़े वेग से चल रहा
कार्य बोझ बेहिसाब बढ़ रहा
समय की भी कोई सीमा नहीं रही
पूरब पश्चिम के कारण भी युवा पीस रहे
यहाँ ढलती शाम वहाँ सुबह हो रही
इस चक्कर में हमारी नींद खो रही
इच्छाओं पर भी अंकुश हम लगा नहीं रहे
काम की चक्की में पीसते जा हम रहे
पर स्वस्थ रहना है तो
ध्यान रखना ही होगा
जीवन में संतुलन बना कर , चलना ही होगा
मैं ठीक हूँ अपना ख़्याल रखता हूँ
कुछ भी हो व्यायाम का समय निकालता हूँ
ट्रेड मिल पर चढ़ न पाता
दौड़ लगा आता हूँ मैं
भोजन में , मीठा कम कर दिया मैंने
तेल , मशालों से भी जरा, दूर भागता हूँ मैं
मन को शान्त करने का प्रयास करता हूँ
सुनता हूँ संगीत
अभ्यास करता हूँ
माँ ! संगीत जादू का काम करता है
तनाव से मन को आज़ाद करता है
जीवन है तो कठिनाइयों का
न आना नामुमकिन
चिन्ता नहीं करता
हल ढूँढ़ने का प्रयास करता हूँ
किताबों से तालुकात सदा रहते हैं मेरे
समाचार, फ़िल्मों से भी मन बहलते हैं मेरे
यार भी हैं मेरे ढेर सारे
संग मिलकर फूटते हैं
हँसी के ग़ुब्बारे
परिवार के संग , कुछ पल
नित गुज़ारता
बच्चों की ख़ुशी में
अपने को ढालता
बेटे !
यह संदेश हर युवा को पहुँचा दे
हर माँ के दिल को शकुन मिले
यह आस जगा दे
सभी तेरी तरह , अपने पर ध्यान दें
जिन्दगी को नये रूप में संवार दें।

@ मणिमाला कंठ, अमेरिका

मां

आजकल तेरे कमरे के ताले नही खुलते ,पता हैं,
वहाँ पर विराने बसते है ।
यादें समेटकर तेरी ,वहीं बंद कर रखी हैं, डरती हूँ,
तेरे जैसी वो भी ना बिछड जायें।

जब खोलती हूँ कभी तो उमेडती हैं यादें खो जाती हूं,
यादोंमें घंटोतक बीत जाते है।
उठती हूं तब जब लोगोंके दिये जलते है,
मैं भी जलाती हू तेरी यादोंके दियें।

कभी लेट जाती हूं बिस्तरपर तेरे ,खो जाती हूँ,
तेरी बचपन की यादों में आँखे खोलती हूं।
माथा चुमने को तेरा तो धकसा होता है,
माँ का दिल जोंर से रोता है।

आता है तू घर पर जब तो घर स्वर्ग होता है,
पता नही बेटे तबियत का मौसम कुछ बदलसा जाता है।
ना सर दर्द ना कमर दर्द होता है,
तेरा पास होना भी दवाईयों का काम करता है।

तेरी यादों मे रोते रोतें आँखे सूज जाती हैं।
हाँ बेटा माँ आजकल हँसती कम और ज्यादा रोती हैं।

@ माधुरी चौधरी, महाराष्ट्र

रीत

सितारों से भरे नभ में न जाने क्या हुआ होगा।
कहीं किस्मत बनी होगी कहीं धोखा हुआ होगा।।
चले जो सोचकर जग में मुहब्ब्त ही लुटाने की।
कभी खाई कहीं ठोकर तो दिल सहरा हुआ होगा।।
कभी छुप चाँदनी जाती कभी बादल पसर जाते।
चमक जुगनू बिखेरे तो नया किस्सा हुआ होगा।।
कहीं पे नाव टूटी तो वहाँ पानी की बन आयी।
उजड़ जाए अगर घर तो बहुत रोना हुआ होगा।।
बहाने वो बनाते हैं जिन्हें करना नहीं कुछ भी।
करें जो काम दिल उनका सदा दरिया हुआ होगा।।
मचल जाती नदी कोई हिमालय से निकलने को।
पहाड़ों में बशर कोई भगीरथ सा हुआ होगा।।
निभाने की कला कोई जरा पूछो हवाओं से।
महक गुल की दिशाओं में लिए जाना हुआ होगा।।
न जाने क्यों है दीवानी कहीं राधा कहीं मीरा।
धुनों में बाँसुरी की प्रीत का गाना हुआ होगा।।
नहीं जो साथ हो कोई सफ़र सूना लगे जैसे।
अकेले चाँद तारों संग बतियाना हुआ होगा।।

@ रीता प्रसाद, बिहार

बदनाम

यूं तो मेरा भी एक नाम है,
लेकिन बहुत बदनाम है।
सीख लिया विपरीत जाना,
जीवन में है मैंने ठाना।
आयें जिधर से आंधियां,
जाके उनसे ले टकराना,
जूझना संकटों से काम है।
आ गया ये कौन मुकाम है।
यूं तो मेरा भी एक नाम है।
लेकिन बहुत बदनाम है।
बिना मौसम बरसात हुई।
यह क्या कोई बात हुई।
आये मेघ न घटाएं उमड़ीं,
प्रति क्षण मेरी मात हुई,
चल रही घड़ी दिक् वाम है।
लेती नहीं कभी विश्राम है।
यूं तो मेरा भी एक नाम है।
लेकिन बहुत बदनाम है।
किस-किसको मुख दिखाऊं।
किस-किस से इसे छुपाऊं।
मैं लज्जित हूं, प्रफुल्लित हूं,
तुकबंदी कर गीत सुनाऊं,
बिका ईमान टका सा दाम है।
हुआ शिकार ग्राम-ग्राम है।
यूं तो मेरा भी एक नाम है,
लेकिन बहुत बदनाम है।

@ प्रफुल्ल कुमार पटनायक, छत्तीसगढ़

महिमा

मैं-मैं पहले बकरी करती,
अब इंसानी की भाषा है।
मैं से ही शुरुवात है होती,
मैं पर ही अंत हो जाता है।

घर परिवार यार व्यापार,
मैं की महिमा अपरम्पार।
खुद की बात का महिमामंडन,
बांकी सबका करदो खंडन।

मैं जो कह दूँ सत्य वही है,
बाँकी सब मिथ्या भ्रम ही है।
मैं मैं मैं मैं बस मैं ही हूं,
बकरी मैं इंसान भी मैं हूँ।।

@ चित्रेश त्रिपाठी

कल्कि

ये जान नहीं पाया अब तक,
ये समझ नहीं आया अब तक,
कलयुग में कल्कि जो आएंगे,
वो किस से, किसे बचाएंगे?

पहले तो होता ये था के दो पक्ष हुआ करते थे,
पाप पुण्य या झूठ सत्य दो अक्ष हुआ करते थे।
एक पक्ष की सुनना आसां था, एक पक्ष को चुनना आसां था।
पर अब के कार्य बड़ा भारी, अब सब पापी सब व्यभिचारी।

पाखण्ड-आडम्बर बाहर है, हर मन के भीतर रावण है,
दुर्योधन और दुःशासन सी, प्रत्येक सोच अब क्षण-क्षण है।
होलिका, पूतना, शूर्पणखा से चार कदम आगे बढकर,
अब खून पी रहे सभी यहाँ इक-दूजे की छाती चढ़कर।

किस ओर बढ़ेंगे चरण प्रभु, अब किसको लेंगे शरण प्रभु,
अर्जुन न कोई अब ना सुग्रीव, अंतर्मन मृत, बस तन सजीव,
अब पाण्डव कहीं नहीं होंगे, और अनगिन खण्ड मही होंगे।

किस खण्ड को अब रक्षण देंगे, कहाँ दण्ड अती भीषण देंगे?
किस तरहा होंगे वह चुनाव, बैतरणी तरेगी कौन नाव?
यदि शेष शून्य सज्जन होगा क्या नवयुग तभी सृजन होगा?

क्या प्रलय संग में लाएंगे?
क्या सब विनष्ट कर जाएंगे?
कलयुग में कल्कि जो आएंगे,
वो किस से, किसे बचाएंगे?

@ मुकेश जोशी 'भारद्वाज', उत्तराखंड

जिंदगी

जिंदगी कभी खट्टी,
तो कभी मीठी है,
कभी फूलों की सेज,
तो कभी दहकते अंगारों की अंगीठी है।
जिन्दगी का कोई पल हीरा है,
तो कोई पल मोती है।
किसी पल के लिए जिंदगी स्वयं रोती है,
किसी पल में लोग रोते हैं,जब जिंदगी सोती है।
वास्तव में जिंदगी के हर पल की कीमत होती है।
किसी की कमाई कम,तो किसी की मोटी है।
लेकिन खानी पड़ती सभी को रोटी है।
प्रेम-मोहब्बत और विश्वास,
जिंदगी में हैं खास।
साहस,उमंग और अहसास,
बढ़ाते हैं जिंदगी की आस।
इज्जत देने से ही इज्जत मिलती है,
न्यायोचित कर्म करने से ही जिंदगी खिलती है।
इन्सान की कमाई चाहे बड़ी या छोटी है,
काल के आगे सब खोटी है।
मृत्यु-सुन्दरी जब जिंदगी को आगोश में लेती है,
तो फेल हो जाती हर गोटी है।
समझ लो 'अजय' साथ कुछ नहीं जाता,
केवल कारनामों की चर्चा होती है।
जिंदगी कभी खट्टी,
तो कभी मीठी है,
कभी फूलों की सेज,
तो कभी दहकते अंगारों की अंगीठी है।।

@ डॉ. अजय वर्मा 'अजेय', उत्तरप्रदेश

गुरु और विद्यार्थी

गुरु हमारे जीवन को सरल,सहज,उपयोगी बनाने मे मदद प्रदान करता है। गुरु सदैव मार्गदर्शक के रूप मे होता है। "गु' का अर्थ होता है अंधकार ,अज्ञान और " रु " शब्द का अर्थ होता है प्रकाश ,ज्ञान , अर्थात गु शब्द का विलोम है रु ,लेकिन जब दोनों मिलकर गुरु बनाते है तब इसका अर्थ हो जाता है ,अज्ञान को नष्ट करने वाला। श्री गुरु गीता के 33 श्लोक मे कहा गया है कि अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्मप्रकाश है वही गुरु है। श्री गुरु गीता के 34 वे श्लोक मे कहा गया है कि "गु कार" अंधकार है और इस अंधकार को दूर करने वाला "रु कार" है। अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करने के कारण ही गुरु कहा गया है। "गु कार" को गुणातीत और "रु कार" को रूपातीत भी कहा जाता है। जो गुण और रूप से प्रे हो जाते है ,वही गुरु कहलाने योग्य होते है। श्री गुरु गीता मे भगवान शिव एवं माता पार्वती का संवाद है। यह एक हिन्दू ग्रन्थ है, इसे वेदव्यास द्वारा लिखा गया है। इसे स्कन्द पुराण का भाग भी माना जाता है। इसमे ऐसे कई गुरुओं के बारे मे बताया गया है जैसे – सूचक गुरु ,वाचक गुरु ,बोधक गुरु,निषिद्ध गुरु, विहित गुरु,करणाख्य गुरु अथवा परमगुरु कहा जाता है।

सूचक गुरु – ऐसे गुरु जिसको वर्ण अक्षरों को सिद्ध करने ,वाह्यालौकिक शास्त्रों अभ्यास होता है वह सूचक गुरु कहलाता है ।
वाचक गुरु – वर्ण और आश्रम के अनुसार विद्या का प्रवचन करने वाले ,धर्माधर्म का विधान करने वाले गुरु को वाचक गुरु कहा जाता है ।
बोधक गुरु – पंचाक्षरी आदि मन्त्रो का उपदेश देने वाले गुरु बोधक गुरु कहलाते है । सूचक गुरु एवं वाचक गुरु से यह उत्तम गुरु है ।
निषिद्ध गुरु – मोहन मारण,वशीकरण ,आदि मन्त्रो को बताने वाले गुरु को तत्वदर्शी पंडित या निषिद्ध गुरु कहते है ।
विहित गुरु – संसार अनित्य ,दुखो का घर है , ऐसा समझा जाता है कि जो गुरु वैराग्य का मार्ग बताते है ,वह विहित गुरु कहलाते है ।
कारणाख्य गुरु – तत्वमासी आदि महावाक्यों का उपदेश देने वाले तथा संसार से रोगों का निवारण करने वाले गुरु कारणाख्य गुरु कहलाते है ।

विद्यार्थियों! शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक विकास मे गुरु की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। लेकिन वर्तमान मे गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था न होकर विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था है। विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था मे गुरु का स्थान शिक्षकों ने ले लिया है। यहाँ पर शिक्षक की व्याख्या करना और भी महत्त्वपूर्ण है । शिक्षक मे – "शि" जो सत्य और सौन्दर्य के बीच सेतु की भूमिका मे स्थापित होता है। "क्ष" का तात्पर्य है जो योग क्षेम वहाम्यहम से संचित और संसिद्धि के क्षरण का संरक्षर करने की क्षमता रखता हो । "क" जिसका अर्थ है कर्मण्येवाधिकारस्ते के कर्म भाव से एक निष्ठ संकल्प से अनुप्राणित करने की प्रेरणा से भर दे। अर्थात आदर्श शिक्षक वही है जो अपने विद्यार्थियों का चारित्रिक, नैतिक, मानसिक और शैक्षिक विकास मे सहायक हो सके।

शिक्षक की भूमिका को केवल विद्यालय तक सीमित नही किया जा सकता है। यह भी सत्य है कि बच्चो के प्रथम शिक्षक माता – पिता ही होते है । यह अपने बच्चो को शुभ संस्कारों, आदतों, आचार – विचार से परिचित कराते है। बच्चो का प्रथम विद्यालय भी अपना ही घर होता है, जहाँ पर माता-पिता, सम्बन्धी बच्चो को रूचि – अरुचि, दैनिक क्रियाकलापों, बौद्धिक क्षमता, शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक क्षमता का आकलन करके उसके सर्वांगीण विकास मे सहायक होते है। बच्चो का स्वालम्बी होना, समय का सदुप्रयोग करना, अनुशासित होना और सकारात्मक विचारों का विकास माता – पिता, सम्बन्धी व घर वातावरण पर निर्भर करता है। आगे चलकर बच्चो की सफलता एवं विफलता मे इन्ही संस्कारों का हाँथ होता है । इसके बाद जब बच्चे का प्रवेश स्कूल मे होती है तो "सूचक गुरु" या शिक्षक से होती है। जहाँ से वह पुस्तकीय ज्ञान को अर्जित करना शुरू करता है। विद्यार्थियों मे पंच लक्षणों के बारे मे संस्कृत मे आचार्य चाणक्य द्वारा लिखा गया है कि –

"*काक चेष्ठा, वको ध्यानम , स्वान निद्रा तथैव च।*
अल्पाहारी, गृहत्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणं।।"

यह माना जाता है कि विद्यार्थी के जीवन मे चरित्र का निर्माण होने से धन,वैभव,स्वास्थ्य मे वृद्धि होती है। समय के सदुप्रयोग के बारे अंग्रेजी मे कहावत है कि –

"टाइम इज मनी"

अत: विद्यार्थियों को समय का सदुप्रयोग अवश्य करना चाहिए ,इसीलिए स्कूलों मे समयसारिणी के प्रयोग हेतु प्रेरित किया जाता है । विद्यार्थियों मे विनम्रता अवश्य होनी चाहिए संस्कृत भाषा मे कहा गया है कि –

"विद्या ददाति विनयम, विनयाद याति पात्रताम।
पात्रत्वाम धन माप्नोति, धनात धर्म: तत: सुखम।।"

विद्यार्थी को स्वाध्यायी होनी चाहिए। शिक्षक का उत्तरदायित्व है कि विद्यार्थियों की संशयात्मक वुद्धि को निश्चयात्मक वुद्धि मे परिवर्तित करने का प्रयास करे। उनमे नेतृत्व क्षमता का विकास हो ,साथ ही साथ उनका स्वास्थ्य भी उत्तम रहे। विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान नित्य नवाचारों के माध्यम से करने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रश्नों का उत्तर खोजनें की लग्न ही छात्रों को वैज्ञानिक बनाती है और उत्तर प्राप्त करने की इच्छा शक्ति जिज्ञासा को शांति करती है। विद्यार्थियों मे लगनशीलता के साथ – साथ कर्मठता का विकास अवश्य होना चाहिए। स्वाध्याय विद्यार्थियों को स्वालम्बी ,विद्वान बनाता है। सत्यनिष्ठ, देशभक्ति मे गुरु की भूमिका महत्वपूर्ण होती है इससे विद्यार्थी का नैतिक चरित्र उन्नत होता है।

अत: बचपन से शिशु की मेधा शक्ति व रूचि पहचान कर ही उसे शिक्षा के सोपानो की ओर ले जानें का प्रयास करना चाहिए। जिससे वह भविष्य मे संस्कारी ,लगनशील ,कर्मठ,स्वालम्बी ,शोधपरक आज्ञाकारी ,देशभक्त बन सके ।

@ डॉ. सुनील कुमार तिवारी, उत्तरप्रदेश

कवि

बढ़ती महँगाई और जरूरतों के चलते गरीब व साधारण मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन में कलह बढ़ता देख कवि हृदय भी चिंतित था। अपनी कविताओं को स्वर देने वाले दीनानाथ चिंतित थे और बार-बार कविता लिख कागज़ फाड़कर टोकरी में डाल देते। उनकी कविता में पीड़ादायक भाव आ नहीं रहे थे। उनकी यह हालत श्रीमती शारदा से देखी नहीं जा रही थी- 'क्यों अपना समय खराब कर रहे हो कवि साहब! और कोई काम नहीं है क्या जो कचरा फैला रहे हो?'

दीनानाथ जी को क्रोध आ गया और शेर की तरह हमला कर दिया - 'तुम कचरा कहती हो इसे, जानती हो तुम कितना तपना पड़ता है तब जाकर कविता बनती है और उसे स्वर देता हूँ!'

'पता नहीं तुम्हारी कविताएं एक दिन घर को ले डूबेगी या फिर।।।।?'

'बोलो आगे, रूक क्यों गई?'

'सफेद बाल आ गये मगर दिन अभी भी वैसे के वैसे? ज़िंदगी भर कुछ कमाई तो की नहीं, बेटा किशोर किस हाल में घर चलाता है वह भी कभी नहीं दिखाई दिया और बात करते हो गरीबी, महँगाई की ?'

यह सुन दीनानाथ का मुँह लटक गया। अब जाकर कविता में भाव आ चुके थे।

@ मनीष कुमार पाटीदार, मध्यप्रदेश

परिश्रम

कुछ दिन पहले कि बात हैं एक चित्रकार ने एक दिवार पर बहुत ही सुंदर-सी चित्र बनाई और तरफ दिखा कि इस चित्र में जिसे जो कमी लगें वह यहाँ लिखकर बता दें। ऐसा लिखकर वह चित्रकार वहाँ से चला जाता है। राह गुजरते जिस भी व्यक्ति की नज़र उस दिवार पर बनी चित्र पर जाती वह उसे देख उसकी कमी को लिख दिया करते।

अगले दिन सुबह जब चित्रकार आया और दिवार पर अपने चित्र की कमी को पढ़कर अत्यंत दुःखी हो जाता और वही सड़क किनारे बैठ जाता हैं। तभी राह से गुजरते एक वृद्ध की नज़र उस चित्रकार पर जाती हैं और वह चित्रकार से उसके दुःख का कारण पूछता हैं। तब चित्रकार उस वृद्ध से कहता कल मैंने इस दिवार पर एक चित्र बनाई थी और एक तरफ लिखा दिया था कि जिसे इस चित्र में जो कमी लगे वह यहाँ लिख दें परन्तु किसी को मेरी चित्र पसंद न आई सब ने कुछ न कुछ कमी लिख दी हैं। यह सब सुन उस वृद्ध ने चित्रकार को एक तरकीब सुझाई और उसे वैसा ही करने को कहा। चित्रकार ने उस वृद्ध के बताये हुए तरीके के आधार पर वैसा ही किया उसने उस दिवार पर फिर से एक सुंदर-सी चित्र बनाई और दूसरी तरफ लिखा इस चित्र में जिसे जो कमी लगे वह उसे ठीक कर दें।

ऐसा लिखकर वह वहाँ से चला जाता है। अगले दिन सुबह जब वह आता तो चित्र को देखकर आश्चर्य हो जाता हैं। उस चित्र पर किसी ने एक भी निशान तक नहीं लगाया था। तभी वह समझ जाता हैं कि कमी तो कोई भी निकाल सकता हैं परंतु उसे ठीक कोई भी नहीं कर सकता हैं।

इसीलिए कहा जाता हैं कि हमें दूसरों द्वारा कमी निकाले जाने पर कभी हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि उससे और भी बेहतर करने का प्रयास निरंतर करते रहना चाहिए।

@ गुंजन सोनकर

सैंडविच

पत्नी के गुजर जाने के बाद नरेश चंद्र जी बहुत अकेले से रह गए थे। 45 साल तक का साथ था पत्नी का। लड़ झगड़ा कर जवानी कट गई थी। बुढ़ापे में पत्नी की सुन ही लिया करते थे। क्योंकि उन्हें अहमियत समझ आ गई थी घरवाली की। खाने-पीने का तो ध्यान घरवाली या माँ ही तो रखती है वरना पुरुषों को कहां पता रहता है अपने खाने पीने का। शुगर के मरीज थे इसलिए भूख भी जल्दी लग जाती थी और परहेज का भी खाना होता था। पर पापी पेट का क्या जो मानता ही कहां था। उनकी पत्नी संतोष सुबह उठते ही सबसे पहले उनको चाय के साथ सैंडविच दे देती थी। जिससे उनका कई घंटे तक आधार हो जाता था। उन्हें भी तो आदत पड़ गई थी सैंडविच खाने की। स्टफ बचा कर रख लेती थी संतोष जी। एक दिन ऐसा मनहूस घटा सर्दियों की रात में संतोष जी जो सोई सुबह उठ ही नहीं पाई। संतोष जी तो चली गई अकेले रह गए नरेश जी। अब बहु सूरज चढ़ने पर चाय रख देती थी कभी बिस्कुट दे देती थी और कभी वह भी नहीं। नरेश जी को बहुत याद आता सुबह के नाश्ते में खाया जाने वाला सैंडविच। बुढ़ापे में भी जीभ तो लपारे लेती ही है ना। एक दिन सुबह जल्दी उठ गए थे। वॉक पर भी हो आयें। सोचा क्यों ना सुबह-सुबह नाश्ता खुद ही बना लूं। दबे पाव रसोई में घुस गए। फ्रिज में रखा हुआ एक आलू और ब्रेड भी दिखाई दे गया। फिर क्या था चाय के लिए पानी चढ़ा दिया। आलू को मसाले मिलाकर स्टफ तैयार कर लिया। सैंडविच देख ही रहे थे। रसोई में बर्तनों की हलचल से बहू की आंख खुल गई। "कोई चैन से सोने भी नहीं देता। सुबह-सुबह खटपट कर रखी है। ऐसी क्या जल्दी है रसोई में घुसने की।" बहु गुर्राते हुए रसोई में आ गई। सैंडविच को देखकर एकदम चीखी। यह आलू मैंने सार्थक के स्कूल लंच के लिए रखा है। अब क्या दूंगी उसे लंच में। नरेश जी बोले, "बेटा गुस्सा मत हो। यह सैंडविच सार्थक के लंच में रख देना। मेरा क्या है? मैं तो खाली चाय भी पी लूंगा" ऐसा कहकर नम आंखों से नरेश जी बाहर निकल आए। सैंडविच का स्वाद तो शायद पत्नी के साथ ही चला गया।

@ प्राची अग्रवाल, उत्तरप्रदेश

अपराध बोध

चिड़ियों की चहचहाहट से नहीं बल्कि प्रगति की नींद आज फिर घड़ी की अलार्म से खुली। पिछले एक महीने से कुछ ऐसा ही हो रहा है। आंखें खुली तो प्रगति ने देखा उसके कमरे का ए सी पूरी रात चलता रहा है और अब भी 22 डिग्री सेल्सियस पर चल रहा है। उसने फौरन ए सी बंद कर दिया परन्तु उसके ऐसा करते ही विकास तुरंत बोला -

" अरे तुमने ए सी बंद क्यों कर दिया, चलने दो बहुत गर्मी है।"

ऐसा कहते हुए विकास ने दोबारा ए सी ऑन कर लिया। प्रगति बगैर कुछ कहे कमरे से बाहर आ गई। वह सोचने लगी वाकई गर्मी तो दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। पिछले साल तक तो उसके कमरे में कूलर से ही काम चल जाता था बल्कि सुबह-सुबह कूलर बंद करनी पड़ती थी और एक पतली सूती चादर भी ओढ़ने की नौबत आ जाती थी। चाय बनाती हुई प्रगति यह सब सोचने लगी।

आज रविवार छुट्टी का दिन होने की वजह से प्रगति के दोनों बच्चे और पति विकास को उठने में समय था इसलिए प्रगति चाय की प्याली लिए वरांडे में आ बैठी। टिक टिक करती घड़ी अपने होने का प्रमाण दे रही थी। अभी सुबह के मात्र साढ़े छः ही बजे थे और सूरज आग के गोले बरसाने की तैयारी में था। सुबह से ही तापमान में आए बढ़ोतरी तथा वातावरण में बढ़ते तपिश को महसूस करती प्रगति का ध्यान स्वत: ही अपने आंगन में पड़ रहे तेज धूप की ओर चला गया। उसे स्मरण हो आया कि कैसे आज से एक महीना पूर्व तक उसके आंगन में घने वृक्षों की शीतल छांव हुआ करती थी। आंगन में लगे आम, अमरूद और जामुन के पेड़ों की छाया से घर पर ठंडकता बनी रहती थी।

चिड़ियों की चहचहाहट और कोयल की कुहू।।। कुहू।।।। की मधुर ध्वनि आत्मीय सुकुन देती थी। आंगन में फुदकते चिड़ियों को देख मन चहक उठता था। कभी-कभी चींचीं करती हुई चिड़िया वरांडे में भी आ जाया

करती और जब प्रगति चावल या धान के कुछ दाने आंगन में बिखेर देती, वहां और भी अन्य चिड़ियों का समूह दाना चुगने आ जाता। वृक्षों की शीतल छांव में सुबह से लेकर रात तक चींचीं करती हुई चिड़िया कभी आंगन, कभी वरांडे और कभी इस डाली से उस डाली में उड़ती रहती। गुड़हल, कनेर, चमेली और मोगरा के पौधे में खिले फूल पर तितलियां व भौंरे मंडराते रहते। छोटी-छोटी, प्यारी-प्यारी गिलहरियां इधर-उधर उछलती दिखाई देती। प्रकृति का यह मनमोहक, मधुरम नजारा अब खो चुका था।

आज आंगन और वरांडे का सूनापन, तेज धूप, बढ़ती गर्मी, चिड़ियों का कहीं और जा कर विस्थापित हो जाना। यह सब सोच प्रगति को अपनी भूल का एहसास होने लगा। पतझड़ में गिरते सूखे पत्ते, बारिश में मिट्टी की वजह से गीला होता आंगन, तेज हवा से वरांडे में आते धूल मिट्टी। इन सभी से निजात पाने की चाह और अपने आंगन को खूबसूरत बना कर सुंदर चीनी-मिट्टी के गमले में बोनसाई और मौसमी फूलों से सजाने की ख्वाहिश, इन सभी की चाहत में प्रगति और विकास ने एक महीने पहले सारे वृक्ष और बड़े पौधे को कटवा कर पूरे आंगन में टाइल्स बिछवा दिया था। यह भी नहीं सोचा कि वे अपना घर सुंदर और खूबसूरत बनाने की चाह में उन चिड़ियों, गिलहरियों, तितलियों और भौरों का घर उजाड़ रहे हैं। साथ ही साथ अपना वर्तमान और अपने बच्चों का भविष्य भी खतरे में डाल रहे हैं।

प्रगति के मन में आए इन विचारों ने उसे अपराध बोध से भर दिया। वह विचलित हो उठी। तभी उसकी नज़र गमलों में लगे पौधों पर पड़ी जो तेज धूप की वजह से मुरझा गए थे। पौधों पर पानी डालती हुई प्रगति ने पुनः अपने आंगन में वृक्षारोपण का दृढ़ संकल्प लें लिया।

@ प्रेमलता यदु, छत्तीसगढ़

किन्नर

"मन के संसार में
तन का हाहाकार लिये
ये कौन है जो हँसता है
वो किन्नर है वो किन्नर होकर"

किन्नर सृष्टिकर्ता के सृजन का सबसे अधिक कुरूप,भद्दा और आधा अधूरा स्वरूप है।एक ऐसी रूह जो गलत तन में अपने-आपको सिद्ध करने के लिये निरन्तर प्रयत्न करती रहती है। जहाँ तन कुछ और चाहता है और मन उससे अलग कुछ और कैसी भूल है ये ईश्वर की। लगता है मानो रचना करते समय सहसा उसका ध्यान भटक गया होगा और तन तो बना दिया नर का या नारी का और उसमें मन रख दिया नर में नारी का और नारी में नर का।

यूँ तो किन्नरों के अस्तित्व का उल्लेख बहुत पुराने समय से देखने को मिलता है ।ये ऋषि कश्यप और अरिष्टा की सन्तान माने जाते है। महाभारत में भी शिखंडी और वृहन्नलला (अर्जुन) किन्नर देखने को मिलते है। पुरातन समय में कैलास पर्वत पर अधिकतर इनका वास माना जाता था। प्राचीन काल से लेकर आज तक के समयकाल में किन्नर विवाह उत्सवादि में नाच-गाने के लिये जाने जाते है। कैसी विडम्बना है जो खुद के लिये अभागा है वह दूसरों के लिये भाग्यशाली है, जिसका जन्म ही उसके लिये एक बददुआ जैसा है ,उससे लोग अपने जीवन के लिये दुआ माँगते है।

जैसे पिंजरे में बन्द पंक्षी अपने खुले आसमान में उसने को व्याकुल रहता है वैसे ही विपरीत देह में फँसी रूह भी अपने देह के आसमान में मिलने को आतुर रहती है। अपनी देह और उसके अंग ही उसे अपरिचित से लगने लगते है। अपनी ही देह को अपनी इच्छानुसार सजाने एवं चलाने के लिये उसे पूरे समाज की नजरों का निशाना बनना पडता है। कैसी विवशता है कि अपने मन की यह अनुभूति वह किसी को बताने में शरम का अनुभव करता है। खुद के जन्मदाता ही उसको अजीब धिक्कार भरी निगाहों से देखने लगते है। खुद की कोई गलती न होते हुये भी यह जन्म उसे अभिशप्त कर

देता है ऐसा जीवन जीने के लिये। अभी तक किन्नर न तो भारत के नागरिक थे और न ही इन्हें भारत की जनगणना में शामिल किया गया था बेहद आश्चर्य की बात है। ये भी इन्सानों की तरह ही जन्म लेते है उन्ही की तरह हँसते और रोते है उनकी तरह ही मन मस्तिष्क और हृदय रखते है लेकिन भारत सरकार के कागजों में इनके जीने मरने का कोई सबूत नही होता था। यूँ ही जन्म लिया और यूँ ही मर गये जैसे जानवर, किन्तु किन्नर गौरी सावंत ने 16 अप्रैल 2014 में किन्नरों को थर्ड जेन्डर नाम से मान्यता दिलवायी। ये किन्नरों के अस्तित्व एवं मान्यता के सन्दर्भ में एक ऐतिहासिक कदम था। इसके बाद प्रत्येक सरकारी कागज पर नर मादा और थर्ड जेन्डर लिखा जाने लगा था।

अब किन्नर समाज भी भारत सरकार का नागरिक हो गया था जहाँ उसका जन्म मृत्यु पंजीकृत हो गये थे। सरकारी नौकरियों में भी उनके लिये स्थान सुरक्षित रखा जाने रखा था। गौरी सावंत ने तो संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया है। गौरी सावंत को नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। किन्नरों के यौन उत्पीड़न के विषय में भी गौरी सावंत ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

इसके अतिरिक्त शबनम मौसी मध्यप्रदेश विधान सभा में विधायक रही है। आज किन्नर हमारे देश में अनेक प्रतिष्ठित पदों पर सुसज्जित है और राजनीति में भी बराबर सक्रिय है। पूजा, लक्ष्मी, सोनम आदि कई किन्नर जाने माने नाम बन चुके है। देखा जाये तो किन्नरों के प्रति आज समाज में हेयता का भाव कम हुआ है। लोग इन्हे मन से अपनाने लगे है।इनके साथ घुलने मिलने लगे है।और होना भी यही चाहिये। देखा जाये तो किन्नर एक तरह से अर्द्धनारीश्वर ही तो है। सत्य ही किन्नर सम्पूर्ण नर- मादा समाज के भाल का भाग्यतिलक है।

@ अन्जना मनोज गर्ग, राजस्थान

चार पैसे वाला गणित

हमारे समय में 11वीं में बोर्ड की परीक्षा के बाद में ही कालेज दाखिला होता था । इसलिये नवीं में ही विज्ञान, वाणिज्य या कला संकाय में से एक पर सोच विचार कर निर्णय करना आवश्यक होता ताकि तीन साल बाद यानि ग्यारहवीं के बोर्ड परीक्षा बाद स्नातक वाली पढ़ाई उसी अनुरूप से पूरी की जा सके। सो मेरे प्रधानाध्यापक जी ने आठवीं में गणित वाले अच्छे परिणाम स्वरूप, मेरे बड़े भाई को समझा कर विज्ञान संकाय में मेरा दाखिला का आवेदन ले लिया । दस ग्यारह माह पश्चात एक दिन मेरी विज्ञान वाली पुस्तकों को देख पिताजी के ध्यान में आया कि मैं तो विज्ञान संकाय ले रखा है, सो विफर पड़े और कह दिया कि विज्ञान अपने काम की नहीं। वाणिज्य संकाय से पढ़ाई करनी है। ध्यान रखना चार पैसे जब पास में होंगे तभी यह दुनिया तुम्हारी कद्र करेगी। इसलिये चार पैसे कमाने पर ध्यान देना है। उस समय तो मैं यही समझा कि पढ़ाई के साथ कमाने का समझा रहे हैं।

लेकिन बाद में जब मैंने अपने परिवार के सम्बन्धियों के यहाँ भी बड़े बुजुर्गों को डाँट कर अपने से छोटों को कहते सुना कि चार पैसे कमाने अक्ल नहीं है। देर तक सोने में मन तो लगता है न ? तब चार पैसा वाली बात सुन बड़ा ही आश्चर्य हुआ और यह चार पैसा वाली गुत्थी को समझनें की ललक जागी।

इसी बीच रास्ता पार करने के लिये जब सड़क पर खड़ा था तभी बगल में खड़े दो दोस्त आपस में बात कर रहे थे जहाँ एक कह रहा था "सारी जिंदगी निकली जा रही है, कमाने में लेकिन अभी तक चार पैसे नहीं जुटा पाया हूँ", फिर जबाब में दूसरे ने कहा "जब पढ़ने नहीं दिया हमें, इस ज़माने ने, तो लगादी पूरी ताकत अपनी, हमने चार पैसा कमाने में"। यह वार्तालाप जब कान मे पड़ा जिसमें फिर चार पैसा सुनने मिला तब अपने घर पर पढ़ाने वाले शिक्षक से इस को समझाने का आग्रह किया।

उन्होंने मुझे बताया कि उपरोक्त सभी में चार पैसा का प्रयोग एक कहावत की तरह हुआ है। फिर उन्होनें कहावत के बारे में बताते हुये बताया कि

कहावतें प्रायः सांकेतिक रूप में होती हैं यानि वो वाक्यांश जो "जीवन के दीर्घकाल के अनुभवों को छोटे वाक्य में कह कर आपको समझा देती हैं।"

इसके बाद उन्होनें यह भी बताया कि 'चार' शब्द से हमारे यहाँ अनेक मुहावरे बहुत ही प्रयोग में लाए जाते हैं जैसे चार पैसे कमाओगे, तब समझ में आयेगा।। के अलावा चार लोग क्या कहेंगे।।।।, चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात।।।, चार सौ बीसी करना।।।।, वगैरह वगैरह। उन्होनें यह भी बताया कि अनेक तरह के अर्थों को समझाती अनेक कहावतें हमारी संस्कृति में उपलब्ध है। मैं एक एक कर सभी का मतलब समझा दूँगा।लेकिन अभी चार पैसे कमाओगे, तब समझ में आयेगा।। वाले अखाणे [कहावत] का मायने विस्तार से समझ लो। उनके द्वारा समझाया गया मतलब को मैं यहाँ आप सभी पाठकों के साथ सांझा कर रहा हूँ जो इस प्रकार है -

उन्होनें यह चार पैसे कमाओगे, तब समझ में आयेगा।। वाले अखाणे [कहावत] का मतलब विस्तार से समझाया। उसी को मैं यहाँ आप सभी पाठकों के साथ सांझा कर रहा हूँ जो इस प्रकार है -

पहला पैसा को कुँए में डालना ... मतलब।।"अपने परिवार के पेट रूपी कुँए में डालना होता है अर्थात अपना तथा अपने परिवार पत्नी, बच्चों का भरण-पोषण करना, पेट भरने के लिए।"

दूसरे पैसे से पिछला कर्ज उतारना ... मतलब ।। "माता पिता द्वारा किए गए हमारे पालन-पोषण वाला क़र्ज़ उतारने के लिए ।।। यानि उनकी सेवा के लिए दूसरा पैसा है।"

तीसरे पैसे को आगे क़र्ज़ देना है ... मतलब ।।"अपनी संतान को पढा़ लिखा कर योग्य बनाने के लिए ताकि वो भी आगे वृद्धावस्था में आपका ख़्याल रख अपना कर्ज उतार सकें।।।"

चौथा पैसा को संभाल ... मतलब ।। "आड़े वक्त के लिए जमा करने के लिए होता है, अर्थात शुभ कार्य करने के लिए दान, सन्त सेवा, असहायों की

सहायता करने के लिए, यानि निष्काम सेवा करना, क्योंकि हमारे द्वारा किए गये इन्ही शुभ कर्मों का फल हमें इस जीवन के बाद मिलने वाला है। याद रखें हमारे सनातन धर्मानुसार दान दक्षिणा की तरह और भी शुभ कार्यों जैसे सत्कर्मों का फल हमें अगले जन्म में मिलता है।

अन्त में उपरोक्त वर्णित का निष्कर्ष यही है कि इस कहावत में चार पैसे का मतलब सम्पूर्ण धन से है और उसके चार हिस्सों को जिंदगी में कैसे उपयोग करना है या उनका जिंदगी में क्या महत्व है, कैसे खर्च करें, किस किस मद में खच करें, को समझ लेना है। ध्यान रखें यदि आपने तीन हिस्से किये तो ऊपर समझाये गये सारे कार्य सुचारु रूप से पूरे नहीं कर पायेंगे और चार हिस्से के बाद पाँचवे हिस्से की ज़रूरत ही नहीं है।।!!

अतः उपरोक्त वर्णित कार्यों को सही ढंग से पूर्ण करने के लिये हमें हमारे धन को चार हिस्सों में विभाजित करना आवश्यक होता है। इस तरह ऊपर उल्लेखित तथ्यों को ही संक्षिप्त में लोकोक्ति के रूप में चार पैसे कमाओगे, तब समझ में आयेगा।। कह कर सामने वाले को चार पैसों का गणित समझा दिया जाता है।

@ गोवर्धन दास बिन्नानी "राजा बाबू", मुम्बई

गर्मियों की छुट्टियां

बेटे ने पहले ही मां से कह दिया कि मम्मी पापा से कह देना अबकी बार हम छुट्टियों में गांव नहीं जाएंगें, मेरे सारे दोस्त अच्छी अच्छी जगह छुट्टियों में घूमने जाते हैं और खूब इन्ज्बाय करते हैं और स्कूल खुलने पर वहां की बडी बडी बातें बताते हैं और हां टीचर ने भी होलीडेज होमवर्क में गर्मियों की छुट्टियों के बारे में लिखने के लिए कहा है।

पत्नी ने भी सुमेर से कह दिया कि अबकी बार आमोद की गर्मियों की छुट्टियों में किसी हिल स्टेशन पर जाएंगें ,अभी से कार ,होटल, टिकट सब बुक करवा दो, मेरे बस की नहीं है गांव के उमस भरे वातावरण में रहना ,सुमेर सर झुकाये सब सुनता रहा।

अपनी भावनाओं की कुचलन रहरह कर दिल में चुभ रही थी उसे ।मां बापू और घर परिवार से मिलने की उत्कंठा में अपने बोझिल जीवन शैली में एक भागदौड़ से भरा बोझिल दिन टांगने के लिए तैयार हो दिन की भागदौड़ में शामिल हो चला । अपने घर आंगन में कुछ सुकून पाने के लिए उसकी नौकरी कठिन चुनौतियों के साथ अच्छे वेतन वाली थी।

अच्छे वेतन के सहारे उसकी पत्नी और बच्चे अपने आप को नव धनाढ्य जीवन शैली में ढालने की पल प्रतिपल कोशिश में रहते ।दिखाबे के आवरण में भावनाएं अद्रश्य हो चली थीं ।खिलौनों से खेलने वाली पाखी पापा की लाडली नेअभी दुनिया की चमक दमक में कदम नहीं रक्खा था। आफिस से आते आते रात हो आई थका हारा घर पहुंचा तो घर मे सबका संचालन गैजेट्स के रिमोट से होता हुआ मिला।

एक हाथ में पानी का गिलास और दूसरे हाथ में मोबाइल पर वीडियो क्लिप पर ध्यान देती पत्नी ने पानी देने की औपचारिकता पूरी की, दिन भर की थकान उतर जाती अगर कोई मुस्कान के साथ इन्तजार करता मिलता तभी उसकी नन्हीं परी पापा पापा कहकर उसकी गोद में चढ गई, लगा खुशियां सिमट कर उसकी बांहों में भर गई हों। फ्रेश होकर आया डॉयनिंग टेबल

पर सबने साथ बैठकर खाना खाने की औपचारिकता सामने टी वी पर चलते प्रोग्राम देखते हुए की ।

परिवार को व्यवस्थित करने का अर्थ अब बदल चुका है महंगे महंगे गैजेट्स, मार्डन रहन सहन फेसबुकिया फ्रैन्डस जो हमारी अंगुलियों के इशारे पर इधर उधर बिखरे पड़े हैं, पडोसी भी फेसबुक पर अच्छा लगता है साक्षात तो बडा चिपकू घोषित है। मौहल्ले में आधी रात को कोई भी किसी पडोसी की नींद नहीं खराब करता दिक्कतों का समाधान अ ॉनलाइन ढुंढा जाता है।

अच्छी सैलरी होने पर सारी सुख सुबिधाओं को देने वाले उपकरण सुमेर ने इकट्ठे कर लिए पर दिनभर अ ॉफिस की थकान से थककर जब वह घर आता तो तनमन की थकान उतारने वाला उपकरण वह न खरीद सका वह अपनी नजरों से अपने लिए अपने घर में आत्मिय पल खंगालता और औपचारिकताओं को पूरा कर सो जाता। पहले दिन ऑफिस से ही गर्मियों की छुट्टियों के लिए हिल स्टेशन पर जाने की टिकट होटल और घूमने के लिए कार आदि की बुकिंग आनलाइन करा ली थीं ।

अगले दिन सुमेर जल्दी जल्दी तैयार हो कर ब्रेकफास्ट कर एक नए दिन को पकडने के लिए जिन्दगी की भागमभाग में शामिल हो चला ।जाते जाते टेबल पर गर्मियों की छुट्टियों के लिए बुक कराई गई टिकट्स के साथ एक खत भी रखकर गया ।

प्रिय सुष्मिता, तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान बनी रहे ऐसा चाहने वाला सुमेर कभी तुमको उदास नहीं देख सकता। तुम लोगों के लिए गर्मियों की छुट्टियों में हिल स्टेशन पर जाने और रूकने की व्यवस्था मैंने कर दी है। पर एक बार सोचना अपने उन अभिभावकों की भावनाओं के बारे में जिन्होंने हमको एक अच्छा भविष्य देने के लिए अपनी इच्छाओं को दबा दिया। जब हमारे साथ रहने के लिए हमारे माता पिता आते हैं तब उनके रहन सहन उनकी बोलचाल से तुम असहज हो जाती हो और उनके वापस जाने पर फ्री सा महसूस करती हो, जब तुम्हारी मां बच्चों को गर्मियों की छुट्टियों में तुमको

बच्चों के साथ अपने पास बुलाती है तो तुम्हारा बच्चों की समर क्लासेज के बारे में कहना या गांव में ए सी नहीं है कह उनके पास जाने से मना करना उनकी भावनाओं पर कुठाराघात करने जैसा होता है।

पिछले दिनों तुम्हारी मां अस्पताल में थीं तुम्हारे फोन पर तीन चार तुम्हारी मां की मिस कॉल देखकर जब मैंने फोन किया तब पता चलने पर मैं उनके पास चला गया था तुमसे बिजनेस टूर का कहकर गया था चार दिन उनके साथ ही रहा अब वह बिल्कुल स्वस्थ हैं तुमको और बच्चों को बहुत याद करतीं हैं ।गांव में भी मां बापू ने बच्चों की छुट्टियों का इन्तजार शुरू कर दिया है ।

जरा एक बार सोचना तुम्हारी आशाओं के अनुरूप तुम्हारे बच्चे सफलता की पींगें भरेगें तब तुम्हारी आशाएं भी उनसे जुड़ जाएंगी। मैं सपने में भी नहीं सोच सकता कि हमारे बच्चे अपनी निजी व्यस्तताओं में तुम्हारे लिए समय न निकाल पाएं, तुम बच्चों की प्रतीक्षा करती रहो और बच्चे नीले वितान में अठखेलियाँ खाएं ।हो सकता है हमारा रहन सहन हमारी जीवन शैली बच्चों की जीवन शैली से पिछड़ जाए और तुम्हारे चेहरे पर खिलती मुस्कान मलिन पड जाए मैं तुम्हारे चेहरे पर सदैव मुस्कराहट रखना चाहता हूँ ।इसलिए मैं अपने बच्चो को अपने माता पिता के साथ समय देने का संस्कार देना चाहता हूँ ।

तुम्हारा सुमेर दोपहर में सुमेर के फोन पर फ्लाइट की टिकट कैंसिल करवाने की डिमांड आ चुकी थी और गांव जाने वाली गाड़ी की रिजर्वेशन की टिकट की फोटो भी आ चुकी थी ।फोन को देख देखकर उसके मनमष्तिष्क पर चढ़ी थकान की परत रिसरिसकर बहती जा रही थी, अपनी जड़ों में आज मजबूती देख रहा था सुमेर और बहुत हल्का महसूस कर रहा था। आज घर वापसी पर कोई थकान न थी घर की आबोहवा में भीनी भीनी सुगंध महक रही थी ।

@ जया शर्मा प्रियंवदा, हरियाणा

बनारसी पान

दोनों पति पत्नी उस दिन अस्सी घाट के किनारे स्थित टैंपल गैस्ट हॉउस से अपना सामान समेट कर और अपना हिसाब किताब पूरा कर के रेलबे स्टेशन की तरफ निकल पढ़े थे। उस दिन रेल गाड़ी बेगमपुरा एकस्प्रेस अपने निर्धारित समय से कुछ समय देरी से चल रही थी। राम नाथ ऑटोचालक को उन्होंने एक दिन पहले ही शाम को रेल गाड़ी के स्टेशन पर पहुंचने के दो घंटे पहले गेस्ट हॉउस मेँ आने के लिए कह दिया था। राम नाथ पिछले दो दिनों से उनके साथ रहा था। उनकी पठानकोट तक जाने की टिकटें बेगमपुरा एकस्प्रेस मेँ आरक्षित थीं और वह किसी भी हालत मेँ ट्रेन को मिस करना नहीं चाहते थे।

राम नाथ नौजवान था और बनारस का ही रहने वाला था। वह बहुत सुहृदय और मिलनसार था। उसकी उम्र यद्यपि अभी छोटी ही थी फिर भी उसे बनारस की संस्कृति और सभ्याचार का काफ़ी ज्ञान था। वह वहां की धार्मिक और इतिहासिक स्थानों को बड़ी अच्छी तरह से जानता था। उसके ऐसे गुणों को देख कर ही उन्होंने उसके साथ अपनी आत्मीयता बढ़ा ळी थी। वह भी अक्सर उनकी सुविधा को ध्यान मेँ रखता और समय के अनुसार सब कुछ करने के लिए कहता। उसे पता चल गया था कि सुषमा का उपवास, पूजा और ईश्वर पर पूर्ण विश्वास है। उसने यह भी जान लिया था कि राजेंद्र पाल का ध्यान इतिहासक और सांस्कृतिक स्थानों को देखने मेँ ज्यादा है। इस तरह उसने उन्हें प्राचीन काशी विश्वनाथ मंदिर, पंचमुखी हनुमान मंदिर के दर्शन करवाए। विश्व प्रसिद्ध बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय, गंगा के सारे घाट, महारानी लक्ष्मी बाई का जन्म स्थान और राम नगर का किला भी दिखाया। उसे बनारस के लगभग हर गली मुहल्ले रास्ते और आध्यात्मिक और इतिहासक स्थानों और उनके इतिहास का भी पूरा ज्ञान था। कुछ स्थानों का उन्हें ज्ञान नहीं था। वो भी उसने उन्हें दिखाए जैसे लक्ष्मी बाई के जन्म स्थल। लक्ष्मी बाई का जन्म बनारस मेँ हुआ था और वह भी अस्सी घाट के पास पढ़ते मुहल्ले मेँ। उसदिन बरसात बहुत थी फिर भी वह उन्हें घुमाने ले गया। वास्तव मेँ उन्होंने दो दिनों तक ही वहां रुकना था और दोनों ही दिन बनारस मेँ मुसलाधार बर्षा होती रही।

ऐसे प्राचीन अध्यात्मिक , इतिहासक और देश की सास्कृतिक नगरी मैँ आ कर एक गेस्ट हॉउस मैँ बैठ कर वर्षा का आनंद लेना उन्हें ठीक नहीं लगा। इसलिये राजेंद्र पाल ने अपने गैस्ट हॉउस के मैंनेज़र और मालिक को बनारस घूमने के लिए कोई योग्य प्रबंध करने के लिए विनय की। वह भी उनके साथ सहमत था और उसने उनको टेक्सी की जगह ऑटो रिक्शा करने की सलाह दी। उसने इस का कारण भी बताया। बर्षा तेज़ थी और बनारस की गलियों और सड़कों मैँ पडे गड्डों मैँ पानी खडा होने के कारण कार कहीं भी फंस सकती थी परन्तु ऑटो वाला बड़ी आसानी से कहीं भी छोटी बड़ी गलियों मैँ ले जा सकता था। इसलिए उसने उन्हे राम नाथ के ऑटो रिक्शा मैँ ही भेजना ठीक समझा। चलने से पहले उसने राम नाथ को कुछ विशेष निर्देश दिए और उनका विशेष ध्यान रखने को भी कहा।

अगले दिनों निश्चित समय के अनुसार वह उन्हें गंगा घाट दिखाने के लिए सबसे पहले नज़दीक के घाट अस्सी घाट पर ले गया था। गंगा के किनारे बने इन घाटों पर लोग पिछले हज़ारों बर्षों से आ जा रहे हैँ। बनारस काफ़ी पुराना पवित्र नगर है। शिव भोले की नगरी है। इस नगर के गंगा तटों ने बड़े बड़े राजा महाराजओं का ज़माना भी देखा है और उसके बाद क्रूर मुगलों का समय भी। हिन्दोस्तान के राजाओं ने इन घाटों के किनारे बड़ी बड़ी इमारतें और इस जगह आने जाने वालों के लिए धर्मशालाएं भी बनबाई। सुबह का निकलता सूर्य सब से पहले इन्हें अपनी रौशनी से सराबोर का देता है। यहाँ की आध्यात्मिक खुशहाली पूरे विश्व को अपनी तरफ खींचती है वहां यहां की संस्कृति और सभ्याचार भी हमारे मनों को अपनी तरफ खींचता है और खुशहाल बनाता है। यहां आ कर सैलानियों का मन एक अद्भुत आस्था लोक मैँ गमन करता प्रतीत होने लगता है। सैकड़ों हज़ारों बर्षो से ऐसा कटटर विश्वास उन्हें यहां ले आता है। ये घाट सदियों से हिन्दोस्तान के राजाओं,महाराजाओं ,अमीरों ,देसी विदेशी पर्यटकों,साधु संतों के साथ साथ आम लोगों को अपनी तरफ खींचते चले आ रहें हैँ। गंगा के किनारों पर बने बड़े बड़े नगर जैसे हरिद्वार, इलाहाबाद, कलकत्ता ऐसे नगर हैँ जिनको गंगा ने अपने साथ जीवत रखा हुआ है। बेशक इसके किनारों पर बनी कुछ इमारतो की हालत इतनी अच्छी नहीं है जितनी आज से बर्षो पहले हुआ करती थी। उनकी दीवारों पर से जगह जगह से उखड़ा हुआ पलस्तर, रंग

रोगन की फीकी पड़ती दशा, खस्ता हालत मैँ लकड़ी के बड़े बड़े दरबाजे अपनी हालत स्वयं बयां करते दिखाई देते हैँ। नई नई बनी आधुनिक इमारतों के सामने यह इतने सुंदर दिखाई नहीं देते हैं फिर भी इन की निर्माणकला से लगता है कि कभी यह बहुत सुन्दर और अपनी कलाकारी और ईमारतसाजी का नमूना होंगे। दूर तक गंगा का शांत पानी और उनमें इधर उधर वहती किश्तयां मन मैँ अजीब तरह के भाव पैदा करती हैँ। थोड़ी देर इधर उधर विचरण करने के पश्चात वो दोनों कुछ देर घाट पर बनी सीढ़ियों पर बैठ गए थे। हाथ मैँ अंगीठी पर रखी चाय की केतली लेकर घूमते हुए काहवा बना कर पिलाने वाले छोटे से लडके से उन्होंने गर्म काहवा पिया था। उनका शरीर एक दम चुस्त दरुस्त हो गया था। इस के बाद यहां कुछ देर के लिए विचरण करने के पश्चात वह उन्हें भारतीय धर्म साधना के महान भक्त कवि रवि दास जी के मंदिर को दिखाने के लिए ले गया बहां महान विचारक और प्रतिभाशाली महाकवि कबीर दास जी के आश्रम मैँ भी ले गया। इन स्थानों पर पूरे देश और विश्व भर से हज़ारों की गिनती में लोग आते हैं। वह उन्हें उसके मुहल्ले की तंग गलियों और तंग बाज़ारों मैं से वहां तक ले गया यहां अधिकतर मुसलमान रहते हैं। इन बाज़ारों मैं दुकानें अधिकतर घरों के साथ बनाई गई हैं जो बाजार की तरफ खुलती है। यह सब मकान पुराने है और दुकाने भी पुरानी हैं जो ज़रज़र हालत मैं हैं। इन मैं पुराने ढंग की कपड़ा बुनने वाली खड़िडयां लगीं हैं और लोग पुराने ढंग से कपड़ा आज भी बुनते हैँ। यहां कुछ लोग आपको घरों और दुकानों के सामने विना काम बैठे दिखाई दे जाएँ गे। असल में वह आने जाने वालों मैं ग्राहक की तालाश मैं रहते हैँ। जब वो उनकी दुकान के आगे से गुज़र जाते हैं तो उन का मन बेचैन हो जाता हैं। उन्हें ऐसे महसूस होता हैं जैसे उनके हाथ से कुछ ना कुछ खिसक गया हो। शाम के चार बजे के करीब वह छोटी छोटी गलियों मैं से aato दोडाता हुआ एक ऐसी जगह पर ले आया था जो अंधविश्वास के साथ जुडी हुई थी। धरती के नीचे कई सीढ़ियां उतर कर एक गहरा सा कुआँ जैसा बना हुआ था। सीढियाँ बड़ी बड़ी और बहुत खूबसूरत बनाई गई थी जिन पर आसानी से उतरा जा सकता था और दूर नीचे पानी तक पहुंचा जा सकता था। उन्हे यह कोई पुरानी बाबड़ी जैसी लगी जिसे किसी ने बड़े सुंदर ढंग से बनाया गया था। सीढ़ियों पर कुछ जनाना कपड़े इधर उधर विखरे पढ़े थे। ऐसे लगता था जैसे

यह जानबूझ कर छोड़ दिये गए हों। यह कोई प्राचीन जगह हैं जिसे बहुत सुंदर बनाया गया है। दूर दूर से लोग यहां स्नान करने के लिए आते है। माना जाता है कि जो बेऔलाद औरत यहां आकर स्नान करे तो उसकी गोद हरि हो जाती है । उन्होंने ऐसा देख सुन कर ऊपर ऊँचे आसमान कई तरफ देखा था और मन ही मन सोचा था। ये संसार है, यहाँ लोगों की आस्थाओं के साथ जुडी अनेक जगहें और संस्थाए है। सुषमा ने भी इस बाबड़ी के साथ यह सब गहरे नीचे जा कर देखा था और एक लंबी सास भरी थी। अपने परिवार की बंस बेल को आगे बढ़ाने के लिए औरत क्या कुछ नहीं करती। उसका औरत मन दर्द से करा उठा था। उसने अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा साफ किया और ऑटो रिक्शा चालक राम नाथ को कहीं और ले चलने के लिए कहा। हल्की हल्की बरसात अभी भी हो रही थी। उसने अपना ऑटो रिक्शा पहले ही मोड़ कर रखा हुआ था। वहां से निकल कर वह उन्हें एक बार फिर लंबी चोडी सड़क पर लेकर आ गया था।

सड़क के साथ साथ एक बढ़ा सा पार्क था। साफ सफाई की कमी थी। गेट की दायीं तरफ एक बढ़ा सा कूड़े का ढेर लगा हुआ था। दो कुत्ते एक मरी हुई मुर्गी को एक दूसरे से छीनने में जुटे हुए थे। उनके नज़दीक ही दो आवारा गायें कूड़े के ढेर मैंँ से कुछ ढूंढ कर खाने मैं व्यस्त थी। ऐसा सब कुछ देख कर उन्हें थोड़ी घिन सी आईं थी। उसने अपना मुँह उसकी तरफ से मोड़ लिया था और राम नाथ को कहा था - 'अरे, कहीं गंगा के घाट की तरफ चलो ना थोड़ी देर के लिए। ' राम नाथ ने भी उसकी बात मान कर अपना ऑटो रिक्शा तेज़ कर के मोड़ लिया था। धीमे धीमी हल्की हल्की वारिश अभी भी हो रही थी। अगले कुछ मिनटों में वह उन्हें फिर अस्सी घाट पर ले आया था। सुषमा ने ऑटो रिक्शा से उतर कर थोड़ी देर सुख की सांस ळी थी। रिक्शा से उतर कर वो दोनों अस्सी घाट पर बने शैलटर में जा कर बैठ गए थे। लोग यहां बर्षा की परवाह किए बगैर ही इधर उधर घूम रहे थे। गंगा के किनारे पर ख़डी नावें पानी के साथ हिलोरे ले रहीं थीं। कुछ लोग कश्तियों में बैठ कर गंगा की सैर कर रहे थे। गंगा में पानी बहुत निर्मल और साफ सुथरा था। राम नाथ अपनी ऑटो रिक्शा में बैठा उनका इंतज़ार करता रहा था। वह एक पॉलीथिन की छत वाली किश्ती में बैठ कर गंगा के दूसरे किनारे पर चले गए। बूंदाबादी अभी भी ज़ारी थी। वह पॉलीथिन की छत के

नीचे बैठे थे पर किश्ती का मल्लाह और उस का एक और साथी अपनी अपनी छतड़ी सिर पर ओड कर अपना बचा कर रहे थे। इस तरह वह किश्ती को चप्पू के साथ धीरे धीरे आगे बढ़ा रहे थे। बर्षा में वे चप्पू चलाते हुए आगे पीछे झूलते हुए पूरा आनंद ले रहे थे। कुछ देर के बाद वे गंगा के दूसरे तट पर उन्हें ले आया था। वहाँ उन से पहले पहुँचे लोग गंगा में स्नान करने के बाद अस्थाई तौर पर यात्रियों के लिए पालीथिन ओढ़ कर बनाए गुस्लखानो में अपने कपड़े बदल रहे थे।

अंधेरा छाने लगा था। घाटों पर हर तरफ बिजली के बलबों ने जग मग करके अपनी रौशनी दूर दूर तक बिखेरनी शुरू कर दी थी। किश्ती वाला उन्हें गंगा के दशाशवमेघ घाट पर होने वाली शाम की आरती दिखाने ले गया था। बनारस का नाम महाश्मशान भी है। जीवन का हर रंग यहां देखने को मिल जाता है। यहां आप को जिंदगी और मौत का शाश्वत रूप भी एक ही समय में देखने को मिल जाता है। जीवन के अंतिम सफ़र की लपटें भी देखी जा सकती हैं। दशाश्व मेघ घाट के पास ही मनिकर्निका घाट और हरिशचंद्र घाट मनुष्य की जल रही चिताओं की लपटें इस बात के प्रति चेतन करती हैं कि जितना शाश्वत जीवन है उतनी मौत भी है। यह ही हमारी संस्कृति है। आरती के समय पूरे गंगा किनारे जगमग जगमग बलबों की रौशनी एक अद्‌भुत और आलौकिक नज़ारा पेश करती है। यह सारा नज़ारा उन्होंने गंगा के बीचौबीच किश्ती में बैठे बैठे देखा। तुलसी घाट उन्हें बार बार याद करवा रहा था कि महान ग्रंथ राम चरित मानस की रचना महाकवि तुलसीदास जी ने यहीं पर की थी।

अगले दिन वह प्रात: लगभग छः बजे उठ गए थे और गंगा के अस्सी घाट पर होने वाली आरती देखने चले गए थे। यहाँ गीत संगीत के साथ सुबह मां गंगा की आरती की जाती है। इस के अतिरिक्त और गीत संगीत के साथ साथ कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। गैस्ट हॉउस लौट कर आने से पहले सुबह के सूरज ने अपनी सुनहरी धूप से आसमान को रौशन कर दिया था। बादलों का कहीं कोई नामोनिशान दिखाई नहीं दे रहा था और आसमान बिलकुल साफ था। कुछ देर टहलने के बाद उन दोनों ने एक कप निम्बू का काहबा पिया जो यहाँ की खास चाय है। यहाँ पर बहुत से

छोटे छोटे बच्चे गर्म अंगीठीयों के ऊपर काहबे की केतली रख कर सभी को निम्बू काहबा पीने के लिए पूछते फिरते हैं। पूरे ग्यारह बजे हम बनारस रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़े थे ताकि रास्ते में अपने पोत्तर हृदयांशु के लिए कुछ खटीदो -फरोख्त की जा सके। उसके लिए राम नाथ हमें एक बढ़िया सी दुकान पर ले गया था। हमने वहां से उसके लिए एक सूट और कुछ खिलौने खरीद लिए थे पर वास्तव में हम कुछ अलग सा सामान खरीदना चाहते थे जो हमें नहीं मिला। आखिर वह हमें एक नए नए बने बड़े से शो रूम में ले गया और कोई विकल्प ना होने के कारण हम ऑटो रिक्शा से उतर कर शो रूम में चले गए। वहाँ से हम नए सौरभ और अभिनव के लिए एक एक शर्ट और जीन पेंट्स खरीदी और जल्दी वापिस आ कर आटोरिकशा में बैठ गए। अब राम नाथ ऑटो रिक्शा को तेज़ दौड़ा कर हमें स्टेशन पर ले आया था। स्टेशन पर पहुंचें तो रेल गाड़ी के आने की अनाऊसमैट हो रही थी कि बेगमपुरा एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय से आधा घंटा लेट पूहुंच रही है। ऐसा सुन कर हमें थोड़ा चैन मिला था। उन्होंने अपने अपने सामान वाले बैग अपने अपने कंधों पर लटका लिए थे। फिर वो राम नाथ को ऑटो का किराया देने लगा तो उसके मन में उस के प्रति अजीब सा लगाब उमड़ पड़ा था। उन्हें लगा कि जैसे वह भी उन से बिछड़ कर उदास हो गया हो। दो दिन बड़े प्यार और सदभावना से वो उनके साथ साथ रहा था। वह उन से किराया लेकर जाना चाहता था पर इस से पहले कि वह उसके हाथ में किराया पकडाता उसने अपनी जेब में से कागज़ कि दो पुड़ियाँ निकाली और उसे देते हुए कहने लगा --

'ये मेरी तरफ से आप के लिए तोहफा है। 'उसने दोनों पुड़ियाँ हाथ में पकड़ते हुए हैरानी से पूछा -'यह क्या है?'

'यह पान हैं, बनारस क़ी सौगात। ' बनारस के लोग जिस का मान सत्कार करते हैं उसे प्यार, स्नेह और आदर क़ी निशानी के रूप में पान देते हैं। पान हमारे यहाँ सम्मान और आदर का चिन्ह हैं 'उसने बड़े नम्र भाव से कहा था। 'पर हम दोनों ही पान नहीं खाते। ' हम उसे टालना चाहते थे। साथ ही हम सोच रहे थे कि पान खाने के पश्चात मुँह में पैदा हुई पीक को कहां थूकें गे। हम तो पहले ही इस काम के खिलाफ हैँ जहाँ देखो वहां ही दीवारों और

सार्वजनिक जगहों को पान की पीक को लोगों ने थूक थूक कर भरा और गंदा किया हुआ है। यह क्या संस्कृति हुई ? ' फिर भी उसने उस नौजवान का दिल रखने के लिए उसे कुछ नहीं कहा।

'नहीं जी साहिब यह तो मीठे पान हैं, ये किसी तरह से भी सेहत के लिए हानिकारक नहीं हैं। 'उसने जैसे हमारे मन क़ी भावना को समझ लिया था। और फिर धीरे से कहा था। 'अब उसने उसके हाथ से पुड़ियाँ पकड़ ली और कभी रामनाथ क़ी तरफ देखता और कभी अपनी पत्नी क़ी तरफ। अब उन दोनों के दिल उसके प्रति प्रेम और स्नेह उमड़ पड़ा था। तब उसने उसे अपनी दोनों बाहो में ले लिया था। वह मन ही मन सोचा रहा था कि यह गरीबड़ा सा बच्चा हमारा कितना सम्मान कर रहा हैं। उस ने पान क़ी दोनों पुड़ियां अपनी पत्नी को पर्स में रखने को दे दीं थीं। बेशक रामनाथ का स्वभाव बड़ा संकोची था फिर भी वह अपने प्यार को अविब्यक्त करने कामयाब हो गया था।

हम ज़रूर ही इन्हें खाएंगे। 'उसका मान रखने के लिए उसने कहा था। अपनी संस्कृति और सभ्याचार के प्रति सच्ची भावना को देख कर मेरा मन द्रवित हो गया था। फिर राजेन्द्र पाल ने उसे किराए के पैसे दिए और कहा - फिर मिलेंगे आपसे अगर कभी दोबारा बनारस आने का अवसर मिला। तब भी हम तुम्हारे ऑटो रिक्शा में बनारस क़ी गलियां, बाजार जो इस बार देखने से रह गई हैँ वो भी देखें गे। ' उसकी बात सुन कर उसे जैसे बड़ा सकूं मिला हो। अब बह ख़ुशी ख़ुशी हाथ जोड़ कर चला गया था।

@ डॉ. लेखराज, पंजाब

प्रतियोगिता

ऊपर दिए गए खाली स्थान में पेंटिंग बनाकर हमारे ईमेल पते पर भेजें, हमारी टीम द्वारा चयनित पेंटिंग को पुरस्कृत व पत्रिका के कवर पर प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

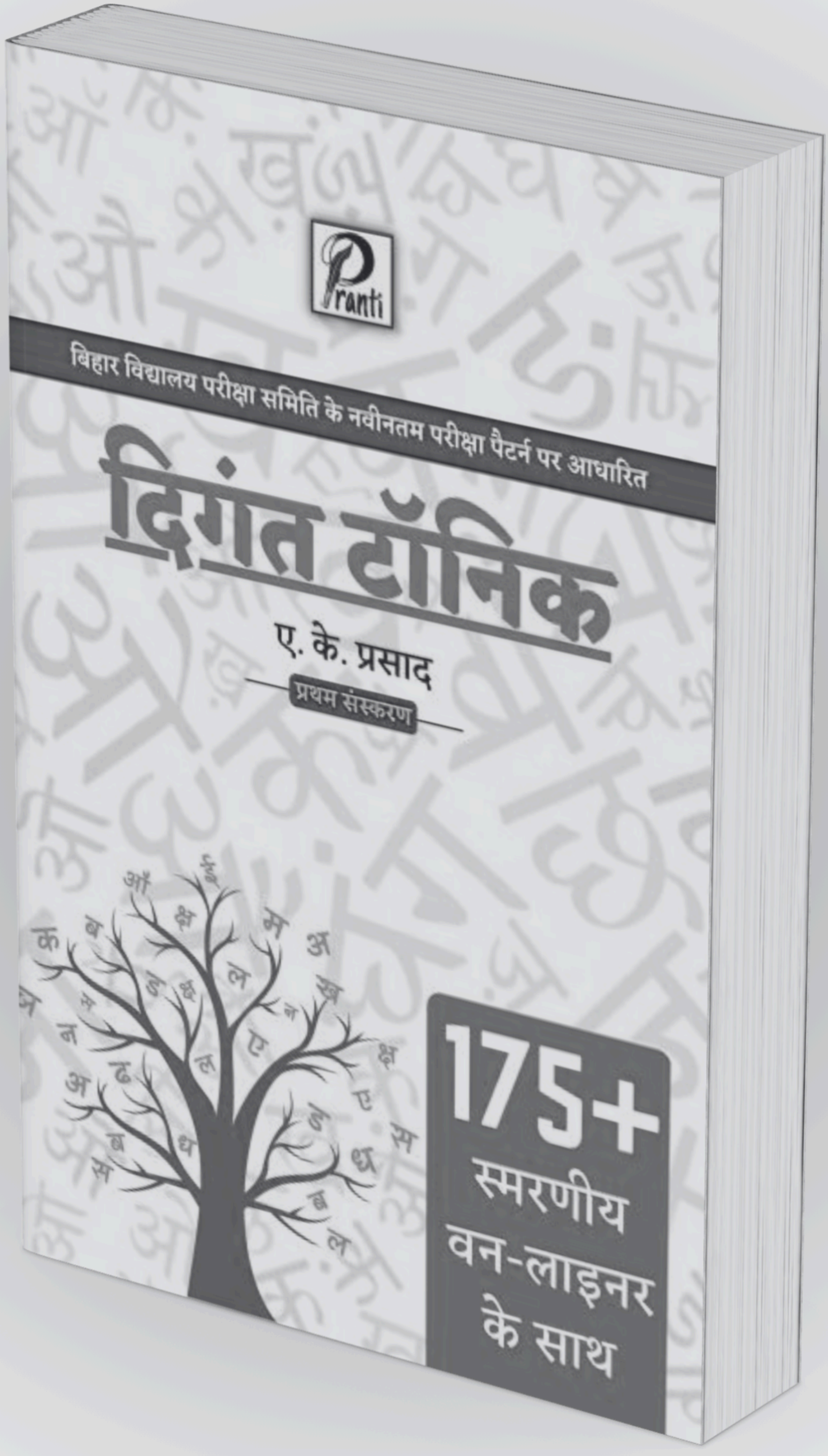
Pranti
बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के नवीनतम परीक्षा पैटर्न पर आधारित
दिगंत टॉनिक
ए. के. प्रसाद
प्रथम संस्करण
175+
स्मरणीय
वन-लाइनर
के साथ

ISSN No : 9334-0970
Regn. No : BR-35-0029626
Publishing Date : 27 June 2024

रचनाकार

- भोला शरण प्रसाद
- अक्षिता जांगिड़
- आरती वर्मा
- रशीद ग़ौरी
- व्यग्र पाण्डे
- ओमप्रकाश मिश्र
- अच्युत उमर्जी
- वंदना सिलोरा
- डॉ. सरला सिंह 'स्निग्धा'
- विनोद प्रसाद
- धीरज कुमार शुक्ला 'फाल्गुन'
- अपूर्व 'आकर्षण'
- नेहा चौरसिया
- प्रिंस पाण्डेय
- डॉ. श्वेता
- आरसी यादव 'चेतनअंस'
- सीमा चुघ
- काव्य वर्षा
- मणिमाला कण्ठ
- माधुरी चौधरी
- रीता प्रसाद
- प्रफुल्ल कुमार पटनायक
- चित्रेश त्रिपाठी
- मुकेश जोशी 'भारद्वाज'
- डॉ. अजय वर्मा 'अजेय'
- डॉ. सुनिल कुमार त्रिपाठी
- मनीष कुमार पाटीदार
- गुंजन सोनकर
- प्राची अग्रवाल
- प्रेमलता यदु
- अन्जना मनोज गर्ग
- गोवर्धन दास बिन्नानी
- जया शर्मा प्रियंवदा
- डॉ. लेखराज शर्मा

Pranti India
Contact : +91 9453535495
Mail : office@prantiindia.com
Website : www.PrantiIndia.com
Office : Bagaura, Bihar - 841404

Pranti India
9 789334 097054